



उच्च शिक्षा के लिए संस्कृति विवि ने किए हैं बेहतर इंतजाम कोरोना से उपजी चुनौतियों का डटकर कर रहे सामना:सचिन गुप्ता



संस्कृति विवि के कुलाधिपति सचिन गुप्ता

प्रस्तुत हैं संस्कृति विवि के चेयरमैन सचिन गुप्ता से हुई विस्तृत बातचीत के अंश

डिजायन सेंटर और यहां इन्क्यूबेशन सेंटर है, जो आसपास कहीं नहीं है। इसके माध्यम से छात्र अपने प्रोजेक्ट को मूर्त रूप दे सकते हैं। हमारी कोशिश है कि बच्चे रोजगार स्वयं का खड़ा करें और अन्य लोगों को रोजगार दे सकें। इसके लिए विश्वविद्यालय स्तर से भी विद्यार्थियों को फंडिंग करने का निर्णय लिया है। हमने विश्व के नामी- गिरामी विवि से एमओयू किए हैं, जिनके माध्यम से ज्ञान और कौशल की विश्वस्तरीय शिक्षा विद्यार्थी हासिल कर सकें। हमारा विवि क्वालिटी बेस शिक्षा दे रहा है। हमारी कोशिश है कि विद्यार्थी जब अपनी पढ़ाई 50 प्रतिशत पूरा करे तभी उसके हाथ में रोजगार के अवसर हों। कोर्स पूरा करे तो उसके हाथ में नौकरी के दो अवसर हों। इसके लिए हमने अपग्रेड कंपनी से टाईअप किया है। हमारे विवि के बी.टेक और एमबीए के बच्चों के पास कम से कम नौकरी के लिए इंटरव्यू के पांच और 10 मौके होंगे। हम चाहते हैं कि अभिभावक इस बात को लेकर पूर्ण रूप से संतुष्ट हों कि उन्होंने जो बच्चे की पढ़ाई पर खर्च किया है वह व्यर्थ नहीं गया है। वे ये महसूस करें कि जब बच्चे ने यहां प्रवेश लिया था और जब उसने पढ़ाई पूरी की तो उसमें कितना बढ़ा सकारात्मक बदलाव आया है।

प्रश्न- आप कहते हैं कि विदेश में भी आपको यहां पढ़ने वाले छात्रों को जाने और अध्ययन करने का मौका मिलेगा ?

उत्तर- देखिए हमारी तो यह कोशिश रहती है कि विदेशी बच्चे हमारे यहां शिक्षा ग्रहण करने आए। हमारे यहां कई देशों के विद्यार्थी पढ़ भी रहे हैं। हमारे यहां सात से आठ देशों के छात्र पढ़ने आते हैं। अभी हमने विश्व के 20 देशों की बड़ी यूनिवर्सिटी से टाईअप किया है, जिसमें अमेरिका, रूस, मलेशिया, फिलीपींस देश शामिल हैं। अलग-अलग टापिक पर इनसे टाईअप हुआ है। हमारे यहां के बच्चे वहां पढ़ने जा सकेंगे, हमारी और उनकी फैंकल्टी का आदान- प्रदान होगा। कुल मिलाकर सोच यह है कि हमारे यहां के विद्यार्थियों का ग्लोबल एक्सपोजर हो, उन्हें

अंतर्राष्ट्रीय ज्ञान और कौशल हासिल करने के अवसर मिलेंगे। असल में टेक्नोलाजी बहुत तेजी बदल रही है, हम चाहते कि हमारे यहां के बच्चे इस लायक बने जो बदलती हुई टेक्नोलाजी अच्छे से ग्रहण कर सकें।

प्रश्न- वर्तमान दौर को देखते हुए आप किस तरह से बच्चों के अध्ययन और रोजगार के अवसरों को उपलब्ध कराएंगे ?

उत्तर- कोरोना महामारी उच्च शिक्षा के लिए भी चुनौती बनी हुई है। हमारे विश्वविद्यालय ने इस चुनौती को स्वीकार किया है। हमने आन लाइन एक्जाम कराए हैं, जिनमें 97 प्रतिशत विद्यार्थियों ने भाग लिया। हमने बच्चों की आनलान क्लासेज के लिए अपग्रेड का स्वदेशी प्लेटफार्म हायर किया है। इसके माध्यम से बहुत तेज गति से सभी आन लाइन क्रियाओं को बहुत तेजी से इस्तेमाल किया जा सकता है। सारे लेक्चर रिकार्ड्ड रहेंगे बच्चे इसको अपनी सुविधा के अनुसार सुन सकता है। हर स्तर कि रिपोर्ट बनाई जा सकेगी। बच्चों से फैंकल्टी सीधे इंटरैक्ट कर सकेंगी। बच्चे अपनी समस्याओं को फैंकल्टी से सीधे इंटरैक्ट कर हल कर सकेंगे।

प्रश्न- आपकी यूनिवर्सिटी इस क्षेत्र में शिक्षा के अलावा स्वेच्छा से और कौन से दायित्वों का निर्वाह कर रहे हैं ?

उत्तर- मैं आपको बताना चाहता हूं कि संस्कृति विवि जिस सोच और मूल्यों को लेकर स्थापित किया गया है, उनमें से एक महत्वपूर्ण सोच यह है कि हम हमेशा यह सोचते हैं कि समाज के साथ हर मुसीबत में खड़ा होना हमारा दायित्व है। हमारे परिवार विशेषकर मेरे पिता के दिल्ली में टेक्नियका के नाम से अनेक शिक्षण संस्थान हैं। हमारे हर शिक्षण संस्थान के साथ एक दिव्यांग स्कूल भी है। इन स्कूलों में दिव्यांग बच्चों को अपने पैरों पर खड़े होने के लिए तैयार किया जाता है। इनकी शिक्षा, भरण-पोषण, मनोरंजन, भोजन, स्कूल तक लाना-ले जाना यह सभी

हमारे शिक्षण संस्थान अपने खर्च पर करते हैं। संस्कृति विवि भी दिव्यांग स्कूल चलाता है। आसपास के क्षेत्र में जाकर हम स्वयं बच्चों का परीक्षण करते हैं और चयन करते हैं। इसके अलावा जब कोरोना महामारी शुरू हुई तो संस्कृति आयुर्वेद और यूनानी कालेज के चिकित्सकों ने गरीबों, मजदूरों में जाकर स्वच्छता और सावधानियों को लेकर जनजागरूकता अभियान चलाया। लोगों को मास्क और काढ़ा वितरित किया। विश्वविद्यालय ने राजमार्ग से गुजरने वाले विस्थापित मजदूरों को भोजन, स्वच्छ पेय जल भी वितरित किया। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री सहायता कोष में सभी शिक्षकों, कर्मचारियों की ओर से विवि प्रशासन की ओर से सहयोग किया। प्रशासन की अपील पर आगे बढ़ कर 300 बेड का चिकित्सालय दिया, जिसे प्रशासन ने एल-वन सेंटर बनाया। जहां से आज भी मरीज ठीक होकर घर जा रहे हैं। उनको विवि की ओर से काढ़ा भी बांटा जा रहा है।

प्रश्न- आपके परिवार में अन्य व्यापार होते हैं, आपने शिक्षा के क्षेत्र में जाने का निर्णय कैसे लिया ?

उत्तर- वैसे यह बात सही है कि हमारे परिवार में अन्य तरह के व्यवसाय भी हैं, लेकिन मेरे पिता श्री आरके गुप्ता ने टेक्नियका नाम दिल्ली में शिक्षण संस्थान स्थापित किए हैं।

मेरे पिता मेरे मार्गदर्शक हैं, उनको प्रेरणा से ही मैं शिक्षा के क्षेत्र में आया हूं और कुछ नया व उल्लेखनीय काम करने का इरादा है। बड़े भाई श्री राजेश गुप्ता जो विवि के प्रति कुलाधिपति भी हैं, हमेशा मुझे उत्साहित करते रहते हैं।

सही बताऊं तो मुझे हमारे देश के राष्ट्रपति रहे, स्वर्गीय एपीजे अब्दुल कलाम के जीवन ने बहुत प्रभावित किया।

वे हमारे विवि भी आए और मैं भी उनके साथ काफी समय रहा। मैं उसी सोच का अनुसरण करना चाहता हूं और देश को आगे ले जाने में सहयोग के रास्ते तलाशता रहता हूं।



संस्कृति विवि ने आनलाइन मनाया स्थापना दिवस समारोह

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय का 10वां स्थापना दिवस समारोह पूर्ण भव्यता के साथ आनलाइन आयोजित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी के महासचिव, राज्यसभा सदस्य अरुण सिंह ने इस मौके पर अपने संबोधन में कहा कि हमें अब रट्टा लगाने वाली शिक्षा से परे सीखने वाली शिक्षा पर आना होगा। नई शिक्षा नीति इसी उद्देश्य को लेकर बनाई गई है ताकि आने वाली 21वीं सदी में भारत के युवा विश्व का नेतृत्व कर सकें। मुख्य अतिथि ने कहा कि वर्तमान दौर कोविड-19 का है जिसके चलते विश्वभर में सारी गतिविधियां ठप हो गई थीं। अब धीरे-धीरे चुनौतियों का सामना करते हुए हम इस स्थिति उपरने के लिए प्रयासरत हैं। इस दौर में भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र सिंह मोदी ने ऐतिहासिक कदम उठाते हुए देश में नई शिक्षा नीति लागू कर यह स्पष्ट कर दिया है कि आने वाले समय में भारत का युवा रिसर्च, कौशल और ज्ञान के क्षेत्र में पूरे विश्व में अपना, क्षेत्र का और देश का नाम रौशन कर सकेगा। नई शिक्षा नीति में सीखने पर ही जोर दिया गया है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इस शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों का क्रेडिट बैंक तैयार होगा। इसी तरह से शिक्षकों के काम का भी क्रेडिट बैंक तैयार होगा। उन्होंने संस्कृति विवि के द्वारा समय से अपने यहां नई शिक्षा नीति को ध्यान में रखते हुए शिक्षण कार्य और पाठ्यक्रमों किए गए आमूल-चूल परिवर्तनों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा नई शिक्षा नीति प्रतिभागों को निखारेगी। विवि के आनरेरी चेयरमैन आरके गुप्ता ने एक प्रसिद्ध गीत, 'दुख के अंदर सुख की ज्योति

दुख ही सुख का ज्ञान', से अपनी बात शुरू करते हुए विद्यार्थियों से कहा कि हमारा जीवन कोरे कागज की तरह होता है जिसपर हमें अपनी इबादत लिखनी होती है। उन्होंने संस्कृति विश्वविद्यालय की सोच को लेकर कुलाधिपति सचिन गुप्ता, प्रति कुलपति राजेश गुप्ता की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह विश्वविद्यालय विद्यार्थियों के अपग्रडेशन के लिए किसी भी तरह का समझौता करने को तैयार नहीं है। यही वजह है कि इतने कम समय में इसने देश के प्रमुख शिक्षण संस्थानों में अपना नाम दर्ज करा लिया है। उन्होंने विवि के शिक्षकों और गैर शिक्षण कर्मचारियों के सम्मिलित प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि कोई भी संस्था अपनी सोच में तभी कामयाब हो सकती है जब सब मिलकर उस सोच को पूरा करने का प्रयास करते हैं। इस संस्था और इसके शिक्षकों, कर्मचारियों के काम के प्रति समर्पण को देखते हुए यह अहसास होने लगा है कि एक दिन इस विवि का स्थान विश्व के चुने हुए विवि में शामिल होगा। कुलाधिपति सचिन गुप्ता ने सभी को 10वें स्थापना दिवस समारोह की बधाई देते हुए कहा कि आज बहुत ही कम समय में

रट्टे वाली नहीं, अब सीखने वाली होगी शिक्षा: अरुण सिंह



मां सरस्वती की प्रतिमा का माल्यार्पण कर स्थापना दिवस समारोह का शुभारंभ करते हुए संस्कृति विवि के कुलाधिपति सचिन गुप्ता।

संस्कृति विवि ने शिक्षा के क्षेत्र में जो स्थान बनाया है, नाम कमाया है वह यहां के शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों और मेरे परिवार के सदस्यों के सहयोग के बिना संभव नहीं था। हमारा पहले दिन से लक्ष्य है कि संस्कृति विश्वविद्यालय का स्थान विश्व के 100 विवि में से एक हो। मुझे खुशी है कि हम अपने लक्ष्य की ओर बहुत तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने बताया कि कोविड-19

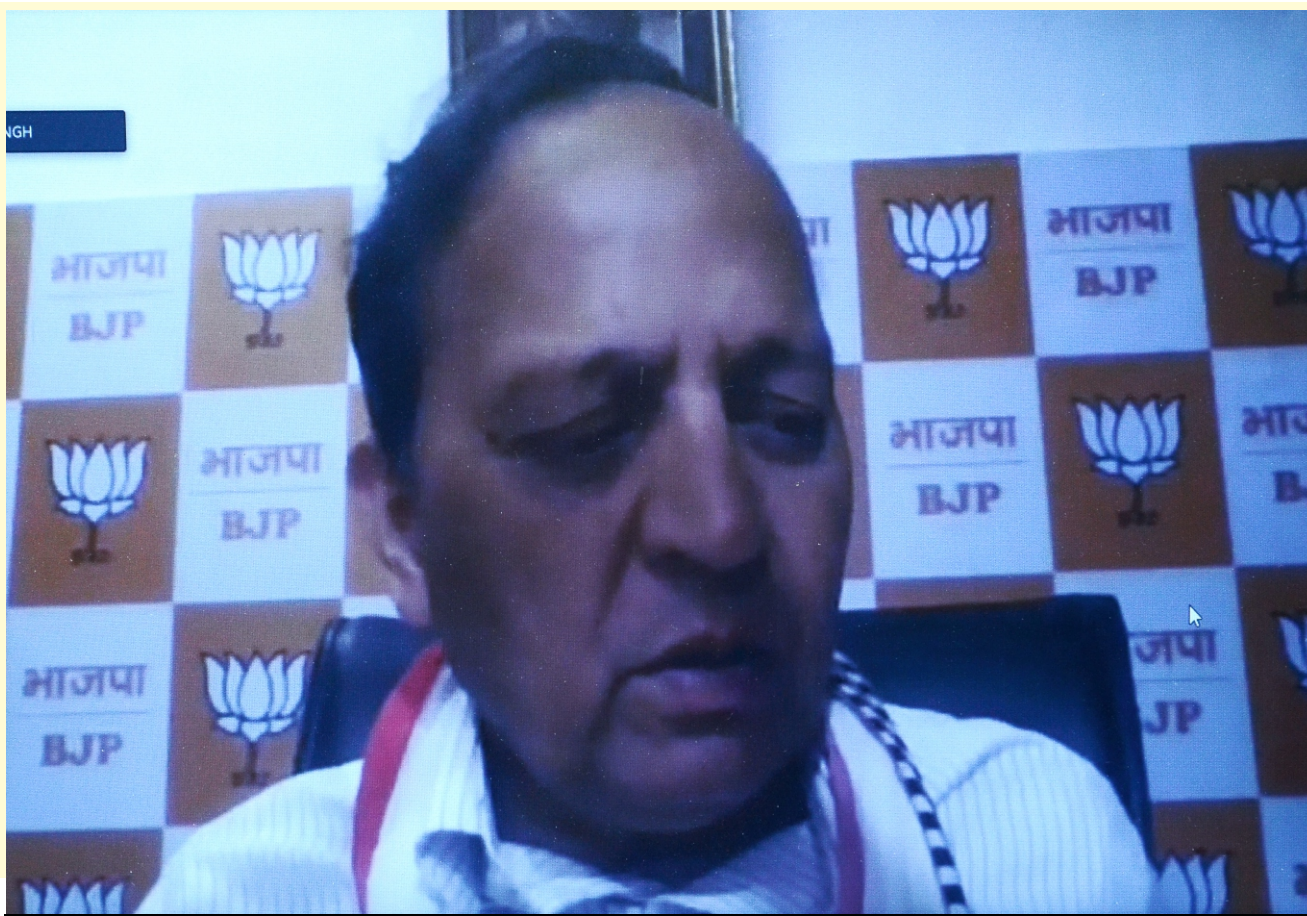
महामारी के शुरू होते ही हमने और हमारी टीम ने एकजुट होकर बच्चों का वर्ष खराब न हो, इसके लिए कड़ी मेहनत की। इस मेहनत का हमें लाभ मिला। हमारे यहां आनलाइन कक्षाओं और परीक्षाओं के माध्यम से हमने सेशन समय पर पूरा किया है। गत वर्ष हमने 1000 हजार शोधपत्र और 150 पेटेंट दाखिल किए, इस वर्ष हमारा लक्ष्य दो हजार शोधपत्र और 200 पेटेंट दाखिल करने का है।

उन्होंने कहा कि वर्तमान दौर चुनौतियों के साथ अवसर का भी है। चुनौतियों को स्वीकार कर हम इस कठिन काल को अवसर में बदल लें तो हमको सफल होने से कोई नहीं रोक पाएगा।

उन्होंने कहा कि हम बहुत बड़ा नहीं कर रहे लेकिन बढ़िया कर रहे हैं। पूर्व राष्ट्रपति स्व. एपीजे अब्दुल कलाम को याद करते हुए उन्होंने उनकी एक कविता के साथ अपनी बात समाप्त की। समारोह में भाग ले रहे दिव्यांग फाउंडेशन के चेयरमैन मुकेश गुप्ता और संस्कृति विवि के प्रति कुलपति राजेश गुप्ता ने सभी को 10वें स्थापना दिवस समारोह की बधाई देते हुए विवि की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं दीं।

समारोह में स्वागत भाषण विवि के कुलपति राणा सिंह ने दिया। समारोह का शुभारंभ सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन से हुआ। समारोह के दौरान विवि की छात्राओं ने आनलाइन अपने गीत और नृत्य प्रस्तुत किए। विवि की विशेष कार्याधिकारी मीनाक्षी शर्मा ने समारोह में भाग लेने वाले सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त किया।

★ ★ ★ ★ ★



समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि राज्यसभा सदस्य अरुण सिंह

10वें स्थापना दिवस समारोह की झलकियां



10वें स्थापना दिवस समारोह की झलकियां





संस्कृति विवि के आनलाइन हुए 10वें स्थापना दिवस समारोह में नृत्य प्रस्तुत करते विवि के विद्यार्थी।

संस्कृति विवि के स्थापना दिवस समारोह कवियों ने छोड़े व्यंग्य बाण

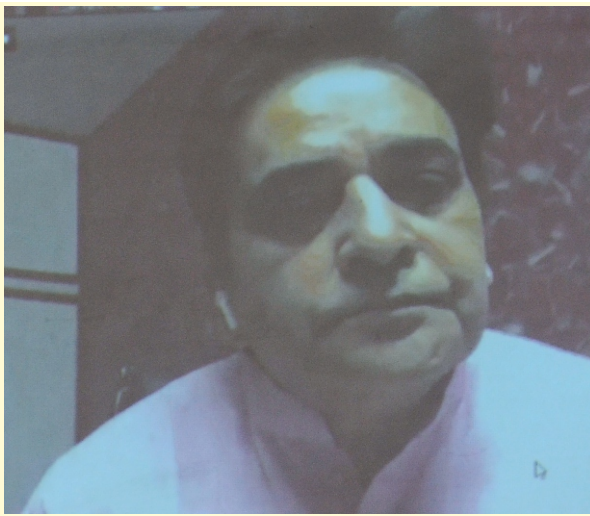
मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय के स्थापना दिवस समारोह के दूसरे सत्र में आयोजित आनलाइन कवि सम्मेलन में जहां एक ओर देश के जाने-माने कवियों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को गुदगुदाया वहीं दूसरी ओर विश्वविद्यालय के शिक्षकों, विद्यार्थियों ने अपने नृत्य और गीतों से समारोह को जीवंत बना दिया। वहीं दिल्ली से आए कलाकारों ने फिल्मी गीत सुनाकर समारोह की शाम रंगीन बना दी। कवि सम्मेलन का संचालन स्वयं यशभारती पुरस्कार से सम्मानित, पद्मश्री अशोकचक्रधर ने अपने हाथों में लिया और सर्वप्रथम हास्य और व्यंग्य के युवा कवि चिराग जैन को आमंत्रित किया। उन्होंने अपनी बात एक व्यंग्यात्मक कविता, 'मेरे पिता ने बचपन में कभी गुड़िया से नहीं खेलने

दिया..' से शुरू की। मीडिया चौनलों की गला काट प्रतिस्पर्धा पर उन्होंने कहा, 'मुद्दा मिल गया हाई-फाई, सारे चौनल लग गए', कोरोना काल पर बोले, किसने बोला काम करो, घर में बैठो आराम करो, जैसे गीतों से खूब हंसाया। अपने गीतों से उन्होंने वर्तमान दौर पर तीखे व्यंग्य बाण छोड़े। चिराग जैन के बाद हास्य और व्यंग्य के प्रसिद्ध कवि ने सोशल डिस्टेंसिंग के परिणामों को व्यक्त करती हुई एक रोमांटिक रचना, 'आज मैं उनसे मिला छह फीट के डिस्टेंस से, प्यार जो उसने दिखाया, मैंने देखा लैंस से', हरियाणावी भाषा की सहजता और हरियाणा के लोगों की बेसाख्त टिप्पणियों को उन्होंने ऐसे अंदाज में प्रस्तुत की की लोग हंसते-हंसते अपने पेट पकड़ने को मजबूर हो

गीत-संगीत की धुनों पर खूब झूमे शिक्षक, विद्यार्थी

गए। अंत में पद्मश्री अशोक चक्रधर ने ब्रज भाषा के महत्व को बताते हुए अनेक गंभीर और व्यंग्यात्मक रचनाएं प्रस्तुत कीं। उन्होंने अपनी एक रचना में कहा, 'तलब होती है बावली, क्योंकि उसमें होती है उतावली, ' ब्रज भाषा में हास्य कविता, 'चौं रे चंपू ' सुनाई। श्रोताओं ने कवियों की रचनाओं का जमकर आनंद उठाया। कवि सम्मेलन के बाद मंच पर गीत और संगीत का धमाल शुरू हो गया। विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने फिल्मी गीतों पर एक के बाद एक आकर्षक नृत्य प्रस्तुत किए। मंच पर शिक्षकों ने भी गीत सुनाकर अपनी छिपी हुई प्रतिभा का परिचय दिया। माहौल ने ऐसा असर डाला कि स्वयं

विश्वविद्यालय के कुलाधिपति सचिनगुप्ता भी स्टेज पर आ गए। उन्होंने एक के बाद एक कुल दो फिल्मी गाने सुनाकर सभी को तालियां बजाने पर मजबूर कर दिया। दिल्ली से आए प्रसिद्ध गायक राहुल पिल्लई ने हिट हिंदी फिल्मों की ऐसी श्रंखला प्रस्तुत की कि श्रोता झूमने के लिए मजबूर हो गए। उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए धमाकेदार पंजाबी गीतों पर शिक्षक, विद्यार्थी और संस्कृति विवि के कर्मचारी मास्क लगाकर जमकर नाचे। कार्यक्रम देर शाम तक चला। कार्यक्रम का कुशल संचालन संस्कृति विवि की फैंकल्टी प्रेक्षा शर्मा और रिका जुनेजा ने किया। ★ ★ ★ ★ ★



कवि सम्मेलन में कविता पाठ करते जाने माने कवि अशोक चक्रधर, अरुण जैमिनी, चिराग जैन।

नई शिक्षा नीति से फार्मैसी की शिक्षा में भी होगा सकारात्मक बदलाव संस्कृति विवि द्वारा आयोजित वेबिनार में बोले प्रोफेसर साहू

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय के स्कूल आफ फार्मैसी द्वारा 'शिक्षा परिषद और राष्ट्रीय नीति 2020' के संदर्भ एक महत्वपूर्ण वेबिनार का आनलाइन आयोजन किया गया। वेबिनार के मुख्य वक्ता इंस्टीट्यूट आफ फार्मासिटिकयल साइंस एंड रिसर्च (डीआईपीएसएआर) दिल्ली के प्रोफेसर डा. पीके. साहू थे। उन्होंने अपने सारगर्भित वक्तव्य में कहा कि नई नीति के बुनियादी सिद्धांत बड़े स्तर पर शिक्षा प्रणाली और व्यक्तिगत संस्थानों का मार्गदर्शन तो करेंगे ही, साथ ही प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमताओं की पहचान और उनके समग्र विकास के लिए भी लाभदायक होंगे। प्रोफेसर साहू ने कहा कि फार्मैसी (एआईसीटी, पीसीआई, यूजीसी)



संस्कृति स्कूल फार्मैसी द्वारा आयोजित वेबिनार में बोलते मुख्य वक्ता प्रोफेसर पीके साहू।

में सरकारी भूमिका उत्तरदायित्वपूर्ण होगी। विद्यार्थी के लिए भी अपनी रुचि अनुसार प्रोजेक्ट को चुनने और सीखने के

क्षेत्र में लचीलापन लाभदायक होगा। इस तरह से विद्यार्थी अपनी रुचि, प्रतिभा के अनुसार अपने भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि कला और विज्ञान के बीच कोई विशेष अंतर नहीं है। मुख्य चीज है ज्ञान किस तरह से हासिल हो रहा है।

विषय को रटा जा रहा है तो व्यर्थ है और वैचारिक स्तर पर विकास हो रहा है तो सही है। सीखने वाले विद्यार्थी की तर्क क्षमता में वृद्धि हो, वो नवाचार के प्रति प्रेरित हो, सकारात्मक सोच उत्पन्न करने वाली शिक्षा ही लाभप्रद है। नई नीति में नैतिकता, मानव और संवैधानिक मूल्य जैसे सहानुभूति, दूसरों

के लिए सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकातांत्रिक भावना, सेवा भाव, सार्वजनिक संपत्ति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक स्वभाव, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी, बहुलवाद, समानता और न्याय जैसे बिंदुओं पर जोर दिया गया है। इसी तरह से बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति को बढ़ावा दिया गया है। रिसर्च के महत्व को ध्यान रखते हुए इसको प्रमुखता दी गई है। वेबिनार में संस्कृति स्कूल आफ फार्मैसी की विभागाध्यक्ष अनामिका श्रीवास्तव ने प्रारंभ में मुख्य वक्ता का परिचय कराया। वेबिनार में विश्वविद्यालय के कुलपति डा. राणा सिंह के अलावा अनेक फैंकल्टी, विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।



संस्कृति विश्वविद्यालय ने साइबेरियन लॉ यूनिवर्सिटी, रूस से किया करार

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय ने साइबेरियन लॉ यूनिवर्सिटी, रूस के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किया। विश्वविद्यालय ने पूर्व में भी विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ विभिन्न समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं। समझौता ज्ञापन दोनों विश्वविद्यालयों के बीच शिक्षा, अनुसंधान और संबद्ध क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने में सक्षम बनाएगा। इस आशय के समझौते पर संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलसचिव पूरन सिंह और साइबेरियन लॉ विश्वविद्यालय के रेक्टर यूरी पी सोलोवे द्वारा हस्ताक्षर किए

गए। साइबेरियन लॉ यूनिवर्सिटी एक रूसी निजी उच्च शिक्षा संस्थान है जो ओम्स्क, पश्चिमी साइबेरिया में स्थित है। इसे ओम्स्क लॉ स्कूल के रूप में स्थापित किया गया था।

ओम्स्क लॉ स्कूल की स्थापना 24 फरवरी 1998 को ओम्स्क हायर मिलिशिया स्कूल के स्नातकों के सामाजिक और कानूनी संरक्षण के लिए उपलब्ध धनराशि से की गयी थी, जिसका नाम 2004 में बदलकर लीगल एजुकेशन एंड साइंस रखा गया था। इसका नाम बदलकर 2012 में ओम्स्क लॉ एकेडमी और 2019 में साइबेरियन लॉ

यूनिवर्सिटी कर दिया गया। साइबेरियाई लॉ विश्वविद्यालय में शैक्षिक प्रक्रिया पूरी तरह से उच्च शिक्षा के संघीय राज्य शैक्षिक मानकों का अनुपालन करती है। साइबेरियाई लॉ यूनिवर्सिटी को राज्य शासन की मान्यता प्राप्त है और अपने स्नातकों को राज्य डिजाइन के डिप्लोमा जारी करती है।

साइबेरियाई लॉ यूनिवर्सिटी एक वैज्ञानिक और व्यावहारिक पत्रिका "साइबेरियन लॉ रिव्यू" प्रकाशित करती है जिसे उच्च सत्यापन आयोग (VAK) के सहकर्मी-समीक्षित वैज्ञानिक प्रकाशनों की

सूची में शामिल किया गया है। यह समझौता छात्रों, विद्वानों और कर्मचारियों के शैक्षणिक गतिशीलता कार्यक्रमों को सुविधाजनक बनाएगा। संयुक्त शैक्षिक कार्यक्रमों के नियोजन का मार्ग प्रशस्त करेगा।

समझौता शोधकर्ताओं को सहयोगी अनुसंधान करने में सक्षम करेगा। संक्षेप में, यह हस्ताक्षर दोनों विश्वविद्यालयों के छात्रों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं के लिए उत्कृष्टता के नए आयाम खोलेगा।



संस्कृति डिग्री कॉलेज

Courses

- ➔ बैचलर ऑफ आर्ट्स (बी.ए.)
- ➔ बैचलर ऑफ साइंस (बी.एस सी.)
- ➔ बैचलर ऑफ लाइब्रेरी (बी.लिब.)
- ➔ मास्टर ऑफ कॉमर्स (एम.कॉम.)
- ➔ मास्टर ऑफ आर्ट्स (एम.ए.)
- ➔ मास्टर ऑफ साइंस (एम.एस सी.)
- ➔ मास्टर ऑफ लाइब्रेरी (एम.लिब.)

संस्कृति यूनिवर्सिटी (SU)

www.sanskriti.edu.in

28 कि.मी. स्टोन, नेशनल हाईवे-19, छाता, मथुरा (यू.पी.), मो0 : 7900888556, 7900888557



संस्कृति विवि में शिविर लगाकर मनाया गया विश्व दृष्टि दिवस

मथुरा। विश्व दृष्टि दिवस पर संस्कृति विश्वविद्यालय के आप्टोमैट्री विभाग, संस्कृति आयुर्वेद और यूनानी हास्पिटल एंड कालेज द्वारा सयुक्त रूप से विवि में निशुल्क शिविर लगाकर फैंकल्टी और कर्मचारियों की आंखों की जांच और दृष्टि संबंधी रोगों के प्रति जागरूक किया गया। इस अवसर पर जानेमाने चिकित्सकों द्वारा परामर्श, उपचार

और निशुल्क चश्मों का वितरण भी किया गया। शिविर में उपस्थित नेत्र रोग विशेषज्ञ डा. मनीष और उनकी टीम ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों और कर्मचारियों की नेत्र ज्योति की आधुनिक मशीनों द्वारा जांच की। डा. मनीष ने इस मौके पर विश्वविद्यालय के अधिकारियों, शिक्षकों और कर्मचारियों को आंखों के अच्छे रख-रखाव के महत्व के बारे

में विस्तार से बताया। जिन लोगों के नेत्रों में किसी प्रकार का विकार पाया गया उन्हें उसके उपचार के लिए परामर्श दिया गया। अनेक लोगों की नेत्र ज्योति की जांच के बाद चश्मा लगाने की सलाह दी गई। आंखों की सफाई, सुरक्षा के बारे में भी आवश्यक जानकारी दी गई। शिविर का शुभारंभ मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन

से हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति डा. राणा सिंह ने 'विश्व दृष्टि दिवस' के महत्व पर प्रकाश डाला। स्कूल आफ मेडिकल एंड एलाइड साइंसेज एवं आप्टोमैट्री विभाग की डीन डा. पल्लवी श्रीवास्तव ने डा. मनीष और उनकी टीम का स्वागत किया। शिविर के कुशल संचालन में फैंकल्टी जगदीश सिंह का विशेष योगदान रहा। ★ ★ ★



कर्मचारियों के नेत्रों की जांच करते चिकित्सक





संस्कृति विवि में दिव्यांग बच्चों को हैप्पीनेस किट वितरित करते विवि के कुलाधिपति सचिन गुप्ता। साथ में हैं अक्षय पात्र के प्रतिनिधि जितेंद्र शर्मा, विवि के कुलपति डा.राणा सिंह, विशेष कार्याधिकारी मीनाक्षी शर्मा।

संस्कृति विवि, अक्षय पात्र ने दिव्यांग बच्चों को बांटीं हैप्पीनेस किट

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय और अक्षय पात्र ने मिलकर दिव्यांग बच्चों को हैप्पीनेस किट का वितरण किया। इस मौके पर संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति सचिन गुप्ता ने कार्यक्रम में उपस्थित दिव्यांग बच्चों के अभिभावकों को कहा कि ऐसे बच्चों के प्रति हमको अपना नजरिया बदलना होगा। इनमें से अनेक बच्चे बहुत प्रतिभाशाली हैं। इनके प्रति सकारात्मक व्यवहार इनके जीवन को खुशहाल बना सकता है। कुलाधिपति ने कहा कि संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा दिव्यांग बच्चों के लिए चलाया जा रहा निशुल्क स्कूल इन बच्चों के लिए ऐसी पाठशाला है जहां इनको अपनी प्रतिभा को और निखारने के अवसर मिलते हैं। यहां बच्चों को सीखने के लिए अनेक उपकरणों की व्यवस्था की गई है। विशेष दक्षता वाले शिक्षक इनको पढ़ाते हैं, विभिन्न खेलों को खिलाते हैं। यहां बच्चों को निशुल्क भोजन भी कराया जाता है। यहां आकर बच्चे इतने खुश हो जाते हैं कि घर जाने का नाम नहीं लेते। दिव्यांग स्कूल तक लाने और घर तक पहुंचाने की भी विद्यालय ने निशुल्क वाहन व्यवस्था की है। उन्होंने अभिभावकों से कहा कि इनके प्रति अच्छा व्यवहार इनको प्रोत्साहित करता है। ये प्यार पाते ही आपके हो जाते हैं। थोड़े से समझाने से ही आपकी बात को समझने लगते हैं।



कार्यक्रम में लगभग 67 दिव्यांग बच्चे और उनके अभिभावक मौजूद थे। कार्यक्रम के दौरान दिव्यांग स्कूल के शिक्षकों ने बच्चों की प्रतिभा के अनेक रोचक किस्से बताए। उन्होंने बताया कि ये बहुत सुंदर साज-सामान, पेंटिंग के अलावा लघु नाटक

और नृत्य बड़ी कुशलता से प्रस्तुत करते हैं। इस मौके पर दिव्यांग बच्चों से जुड़े अनेक किस्से अभिभावकों ने भी प्रस्तुत किए। अक्षय पात्र से आए जितेंद्र शर्मा और विष्णु सिंह ने बच्चों को बच्चों के खाने के लिए बिस्कुट, चिप्स के अलावा दाल, चावल

आदि अनेक वस्तुओं से भरी हैप्पीनेस किट कुलाधिपति सचिन गुप्ता, संस्कृति विवि के कुलपति डा. राणा सिंह, विशेष कार्याधिकारी मीनाक्षी शर्मा के करकमलों द्वारा वितरित कराई।

★★★★★

संस्कृति विवि और टाटा स्टील के मध्य हुआ ऐतिहासिक करार



टाटा स्टील के कैपेबिलिटी डवलपमेंट विभाग के चीफ प्रकाश सिंह



संस्कृति स्कूल आफ इंजीनियरिंग के विभागाध्यक्ष विंसेट बालू



संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलसचिव पूरन सिंह

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय और भारतीय बहुराष्ट्रीय कंपनी टाटा की प्रमुख कंपनी टाटा स्टील के बीच एक ऐतिहासिक समझौता हुआ है। इस समझौते के तहत संस्कृति विवि के विभिन्न पाठ्यक्रमों के छात्रों को टाटा स्टील द्वारा तकनीकी और कौशल प्रदान किया जाएगा। विद्यार्थियों को ई-लर्निंग के माध्यम से इंडस्ट्री 360, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल और मैटेरिअल की शिक्षा प्रदान की जाएगी। इसके अलावा भी अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी यह करार बहुत उपयोगी साबित होगा। संस्कृति

विश्वविद्यालय के कुलपति डा. राणा सिंह ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि टाटा स्टील जमशेदपुर के साथ हुआ यह समझौता विद्यार्थियों के लिए मील का पत्थर साबित होगा। उन्होंने बताया कि कंपनी द्वारा संस्कृति विवि के शिक्षकों पारंगत करने के साथ विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण औद्योगिक जानकारी, विद्यार्थियों की विभिन्न कंपनियों में नियुक्ति के लिए योग्यता में वृद्धि के तरीके, तकनीकी योग्यता के आकलन के तरीके स्मार्ट क्लासेज और वेबिनार के द्वारा सिखाए जाएंगे। इतना ही नहीं विभिन्न अत्याधुनिक तकनीकी प्रयोगशालाओं की

स्थापना के लिए आवश्यक संसाधन जुटाने में परामर्श दिया जाएगा। विद्यार्थियों को टाटा स्टील के उन्नत कारखानों के भ्रमण का भी मौका मिलेगा, ताकि वे औद्योगिक इकाइयों, उनकी कार्यशैली और उत्पादन को नजदीक से जान व समझ सकें। डा. राणा ने बताया कि टाटा कंपनी से जुड़े शावक नानावती टेक्निकल इंस्टीट्यूट के अधिकारियों, विशेषज्ञों के द्वारा विवि को पाठ्यक्रमों के नवीतम निर्धारण, शिक्षण में तो सहयोग प्रदान किया ही जाएगा साथ ही वहां की फैकल्टी द्वारा विद्यार्थियों को ई-लर्निंग के माध्यम से विभिन्न विषयों की शिक्षा

प्रदान की जाएगी। इसके अलावा टाटा स्टील कंपनी के विशेषज्ञ संस्कृति विवि के विद्यार्थियों को साक्षात्कार का प्रशिक्षण भी देंगे। इस ऐतिहासिक समझौते पर संस्कृति विवि के कुलसचिव पूरन सिंह, स्कूल आफ इंजीनियरिंग के विभागाध्यक्ष विंसेट बालू व टाटा स्टील के कैपेबिलिटी डवलपमेंट विभाग के चीफ प्रकाश सिंह द्वारा हस्ताक्षर किए गए। संस्कृति विवि के चेयरमैन सचिन गुप्ता ने टाटा स्टील कंपनी जमशेदपुर के साथ हुए इस बहु उद्देश्यीय समझौते पर हर्ष व्यक्त करते हुए इसकी सफलता के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त की हैं। ★ ★ ★



SANSKRITI UNIVERSITY
FOR EXCELLENCE IN LIFE

SANSKRITI UNIVERSITY

FOR EXCELLENCE IN LIFE

www.sanskriti.edu.in

- ENGINEERING
- EDUCATION
- LAW
- FASHION

- BAMS
- BUMS
- PHYSIOTHERAPY
- PARA-MEDICAL

- HOSPITALITY
- MANAGEMENT
- BIOTECH

- AGRICULTURE
- B. PHARM
- D. PHARM

RANKED AMONG TOP 15 UNIVERSITY IN INDIA BY INDIA TODAY ASPIRE

1000+
Research Papers Published

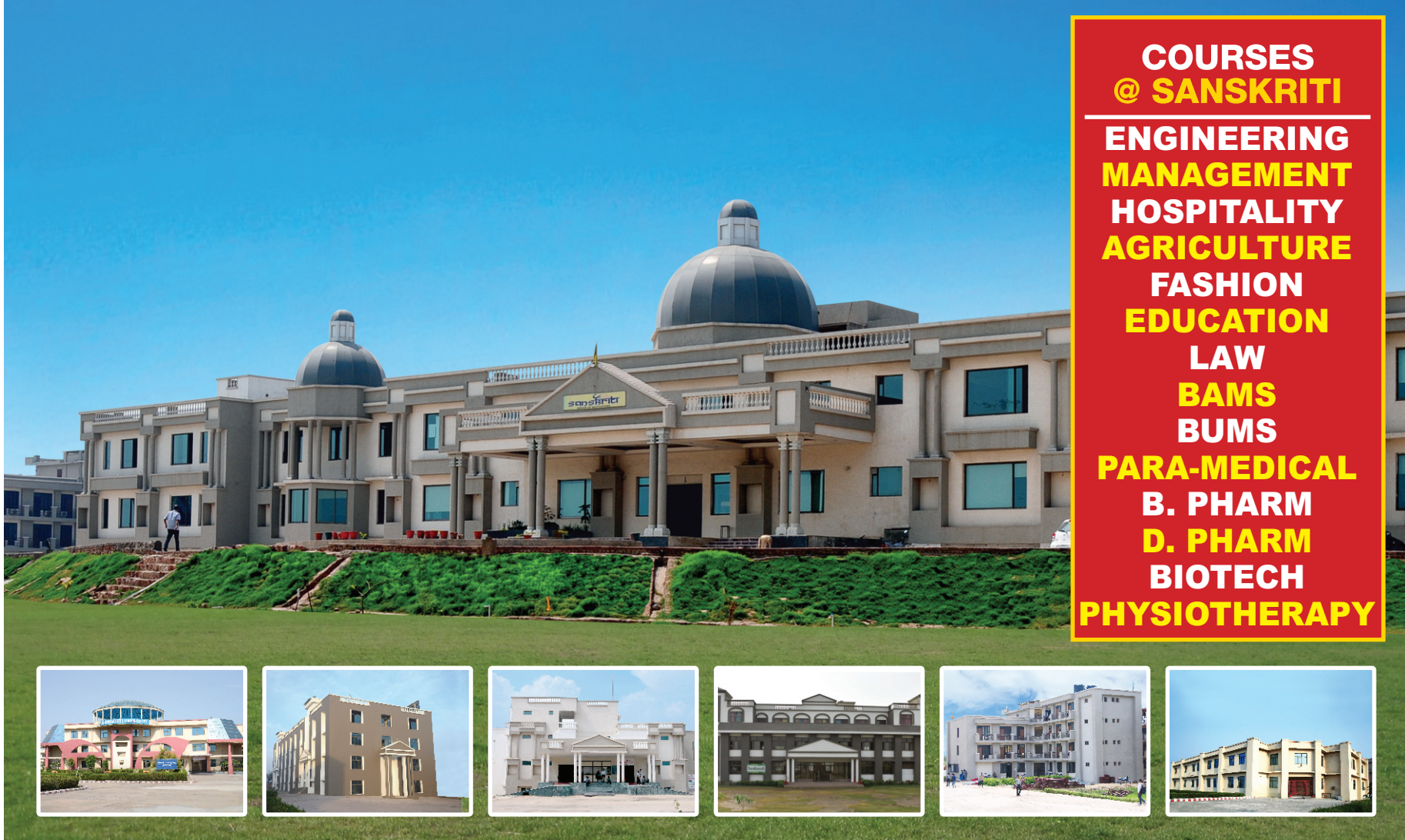
150+
Patents

1st
Incubation Centre
Approved By MSME-PPDC in Mathura Dist.

91%
PLACEMENT

28 K.M. Stone, Mathura-Delhi Highway, Chhata, Mathura

93585-12345



**COURSES
@ SANSKRITI**
**ENGINEERING
MANAGEMENT
HOSPITALITY
AGRICULTURE
FASHION
EDUCATION
LAW
BAMS
BUMS
PARA-MEDICAL
B. PHARM
D. PHARM
BIOTECH
PHYSIOTHERAPY**

संस्कृति विवि के 25 छात्रों को एस्केएच मैटल्स में मिली नौकरी

मथुरा। आन लाइन हुए कैंपस प्लेसमेंट के तहत संस्कृति विश्वविद्यालय के पॉलीटेक्नीक के डिप्लोमा मैकेनिकल इंजीनियरिंग (प्रोडक्शन) के 25 छात्रों को मानेसर हरियाणा स्थित एस्केएच मैटल्स लि. लंबी चयन प्रक्रिया के बाद अपनी कंपनी में नौकरी दी गई है। विवि प्रबंधन ने इस चयन पर सभी छात्रों को बधाई दी है। कंपनी के एचआर विभाग के एक्सिक्यूटिव विनोद कुमार ने बताया कि एस्केएच की शुरुआत 2006 में हुई थी जब कृष्णा ग्रुप ने

मौजूदा मेटल आटो-कंपोनेंट निर्माता का अधिग्रहण किया और इसका नाम बदलकर एस्केएच मैटल्स लिमिटेड कर दिया। एस्केएच मैटल्स, एस्केएच और मारुति सुजुकी इंडिया लिमिटेड का एक संयुक्त उद्यम है। एस्केएच मैटल्स को फ्रंट सस्पेंशन, आर्म सस्पेंशन, मेटल फ्यूल टैंक, एक्सल हाउजिंग, स्टेम्ड और वेल्डेड असंबली जैसे घटकों की आपूर्ति करके मारुति सुजुकी की शानदार विकास यात्रा में एक भागीदार होने पर गर्व है। उन्होंने बताया

कि संस्कृति विवि के छात्रों ने आन लाइन व लिखित परीक्षा में अपनी पूर्ण दक्षता का परिचय दिया। चयनित छात्र कंपनी के मानकों और विषय संबंधी कौशल में पूरी तरह से खरे उतरे हैं, जिसके कारण कंपनी ने इनका चयन किया है। कंपनी में रोजगार के लिए चयनित होने वाले संस्कृति विश्वविद्यालय के छात्रों में ओमप्रकाश, हरेंद्र सिंह, लाखन सिंह, नरेंद्र कुमार, पवन कुमार, मोहित गुर्जर, अंकुश, विष्णु सिंह, विष्णु, वसीम खान, राजेश रावत, अमन मिश्रा,

हर्षित तिवारी, आकाश कुमार, बलदेव तौमर, कपिल यदुवंशी, कृष्ण कौशिक, राहुल , योगेश कुमार, दीपक कुमार, विष्णु चौधरी, पियूष शर्मा, मनिंद्र कुमार, मुकेश और मनीष हैं। एस्केएच मैटल्स लिमिटेड कंपनी में नौकरी पाने वाले छात्रों को विवि की विशेष कार्याधिकारी श्रीमती मीनाक्षी शर्मा ने बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।



B.TECH-CS

with Artificial Intelligence
& Machine Learning

Offering **upGrad** Semester
Certificate Program in
Full Stack Devp. which
includes

10 Interviews Opportunities

MBA

with Artificial Intelligence
& Machine Learning

Offering **upGrad** Semester
Certificate Program in
Business Analytics
which includes

5 Interviews Opportunities



संस्कृति विश्वविद्यालय में विश्वकर्मा जयंती के अवसर पर आरती उतारते विवि के कुलपति डा. राणा सिंह।

संस्कृति विवि में भक्ति व श्रद्धा से मनी विश्वकर्मा जयंती

मथुरा। संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रांगण में स्थित स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग एंड इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी के तत्वावधान में विश्वकर्मा पूजा का आयोजन पूरी श्रद्धा और उल्लास के साथ विधिवत रूप से किया गया।

इस अवसर पर सभी संकाय के सदस्यों एवं अन्य कर्मचारियों ने मिलकर अभियांत्रिकी विभाग के सभी मशीनों, कल पुर्जों इत्यादि की सफाई कर विश्वकर्मा पूजा की। इस अवसर पर आदि शिल्पी भगवान श्री विश्वकर्मा की तस्वीर पर कुलपति डॉ राणा सिंह द्वारा माल्यार्पण किया गया। सभी ने मिलकर वैदिक रीति-रिवाज से भगवान विश्वकर्मा का पूजन किया। पूजा के उपरांत विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों एवं अन्य कर्मचारियों के बीच प्रसाद वितरण किया गया।

विश्वकर्मा पूजा में संस्कृति विश्वविद्यालय के सभी विभागों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। विश्वकर्मा पूजा के शुभ अवसर पर सभी मशीनों, वाहनों, कल पुर्जों इत्यादि का विधिवत साफ सफाई कर पूजन किया गया। कुलाधिपति श्री सचिन गुप्ता जी ने अपने बधाई संदेश में यह कहा कि आदि शिल्पी भगवान श्री विश्वकर्मा ज्ञान और कौशल के जीवंत प्रतिमूर्ति हैं और इनसे प्रेरणा लेकर हमें छात्रों में ज्ञान, कौशल एवं नवाचार प्रदान करने के साथ ही उनमें शोध और नवाचार के

प्रति उत्कृष्टता हासिल करने की आकांक्षा जागृत करनी चाहिए। इस अवसर पर मैकेनिकल इंजीनियरिंग के विभागाध्यक्ष विंसेंट बालू, डिप्टी रजिस्ट्रार दिलीप सिंह, प्रशासनिक अधिकारी विवेक श्रीवास्तव,

अन्य संकाय सदस्य एवं कर्मचारीगण मौजूद थे। विश्वकर्मा पूजा की सबसे अहम बात यह रही कि इसमें सोशल डिस्टेंसिंग, मास्क इत्यादि एवं प्रशासन द्वारा दिए गए अन्य

मापदंडों एवं निर्देशों का पूर्णतः एवं अक्षरशः अनुपालन एवं परिपालन सुनिश्चित किया गया।

